अध्याय 41

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	आराधना (20 मिनट)	*[स्वभाव का प्रगटीकरण]* परमेश्वर की प्रसंशा करना।

इस अध्याय में हम परमेश्वर की प्रसंशा करने के द्वारा उसकी आराधना करना सीखेंगे।

प्रकाशितवाक्य 4:1-11 पढ़ें।

एक दर्शन में यूहन्ना स्वर्ग में एक सिंहासन को देखता है। वह दृश्य इतना सुन्दर और महान था कि यूहन्ना उसकी वर्णन करने हेतू कोई शब्द भी नहीं ढूँढ़ पा रहा था।

1. सिंहासन।

यूहन्ना स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन को देखता है(4:2)। धरती या सूर्य या आकाश में तारामण्डल प्रत्येक विद्यमान वस्तु के केन्द्र को निर्धारित नहीं करता परन्तु सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर करता है। जगत में या धरती पर जो भी कुछ होता है या इतिहास में जो भी कुछ हुआ वह किसी शासक या हाकिम के, या किसी धनी व्यक्ति या किसी चतुर या किसी मास मीडिया या फिर इस दुनिया का बहकाने वाले के हाथ में नहीं है। सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर ही सब बातों का संचालन व नियंत्रण करता है। परमेश्वर ने हर एक वस्तु को अपनी मर्जी के हिसाब से रचा है (प्रकाशितवाक्य4:11) उने आपकों इसलिए बनाया क्योंकि वह आपको चाहता था(यशायाह 43:7;कुलुस्सियों 1:16)। कोई भी चीज़ परमेश्वर के श्रेष्ठ नियमों से बच नहीं सकती है (यशायाह 14:24-27)।

2.चमक।

यूहन्ना ने यीशु के स्वरूप को प्रकट नहीं किया, वरन उसकी चमक को प्रकट किया (4:3)। वह कहता है कि जो सिंहासन पर बैठा है वह यशब और माणिक्य सा दिखाई पड़ता है, और उस सिंहासन के चारो ओर मरकत-सा एक मेघधनुष दिखाई देता है।

तीन रंग। यशब 'बिल्लौर के समान पारदर्शी' होता है (प्रकाशितवाक्य 21:11)। यह एक पारदर्शी हीरे के समान होता है, जो परमेश्वर की महिमा व पवित्रता की चमक को प्रदर्शित करती है।

माणिक्य लाल होता है, जो 'जीवन'(लहू)या परमेश्वर के चरित्र की चमक को दर्शाता है, जिसके द्वारा वह अपने न्याय को प्रगट करता है।

मेघधनुष के सब रंग मिलकर मरकत-सा या हल्का हरा रंग सा दिखाई देता है, जो परमेश्वर की अटल विश्वासयोग्यता(उत्पत्ति 9:12-17; यहेजकेल 1:28) और उसके उद्धार को प्रगट करता है।

तीन रंगों का संदेश। प्रकाशितवाक्य का संदेश नये नियम के काल में परमेश्वर के लोगों के लिए है। परमेश्वर के महिमित व पवित्र चरित्र में(स्पष्ट, व पारदर्शी रंग में) सारी बुराईयों के विपरीत (लाल रंग) परमेश्वर का पवित्र क्रोध व उस पर भरोसा करने वाले लोगों के प्रति उसकी प्रेम पूर्ण विश्वासयोग्यता (हरे रंग में) को कभी अलग नहीं किया जा सकता। परमेश्वर के लोगों के लिए, अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों के लिए न्याय को तूफान समाप्त हो चुका है। जो मसीह में हैं उन पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है(रोमियो 8:1)। यीशु मसीह द्वारा पूरे किये गये उद्धार के कार्यों में होकर, विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने की विश्वासयोग्यता का मेघधनुष हमेशा चमकता रहता है(रोमियों 5:1)। परमेश्वर के चरित्र के ये तीन पहलू उसके सिंहासन से चमकते हैं। परमेश्वर अपने सिंहासन से महिमामय पवित्रता, धर्मी न्याय व विश्वासयोग्य उद्धार के साथ शासन करता है।

बिजली चमकना व गर्जन। उस सिंहासन में से बिजलियां और गर्जन निकलते है(4:5)। इस प्रकार का प्राकृतिक दृश्य लोगों के मन में डर और भय का भाव उत्पन्न करता है। जब भी कभी परमेश्वर अपनी इच्छा को व्यक्त करते हैं तो इस प्रकार का वातावरण परमेश्वर की महानता और ऐश्वर्य को प्रगट करता है। ऐसा ही दृश्य था जब परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को प्रगट किया था(निर्गमन 19:16; 20:18), जब उसने अपने अनुग्रह को अय्यूब पर प्रगट किया (अय्यूब 37:2-7,13ख), जब उसने अपने श्रेष्ठ नियमों को यूहन्ना पर प्रगट किया (प्रकाशितवाक्य 4:5) और जब उसने अपने धर्मी न्याय को प्रगट किया (अय्यूब 37:8-13क; प्रकाशितवाक्य 8:5;11:19;16:18)।

3. त्रिएकता।

यूहन्ना पवित्र आत्मा की परिपूर्णता को देखता है, जो उस पर सात जलते हुए दीपक के रूप में प्रगट हुए जो सिंहासन के सामने जल रहे हैं(प्रकाशितवाक्य 4:5)। और फिर वह यीशु मसीह को देखता है, जो मानों एक वध किये हुए मेमने के समान खड़ा हुआ दिखाई देता है(प्रकाशितवाक्य 5:6)। वह परमेश्वर जो अपने आप को तीन अलग अलग रूपों में प्रगट करता है स्वर्ग के सिंहासन पर बैठा है। वह अपने आपको परमेश्वर पिता के रूप में प्रगट करता है, जो आदेश देता है। वह अपने आपको परमेश्वर पुत्र के रूप में प्रगट करता है, जो परमेश्वर तो है परन्तु मानवीय इतिहास में परमेश्वर पिता के आदेश को पूरा करने के लिए मनुष्य का रूप धारण करता है। और वह अपने आपको परमेश्वर आत्मा के रूप में प्रगट करता है, जो परमेश्वर के लोगों के बीच में वास करता है और उनके जीवन में परमेश्वर के आदेशों को लागू करने में सहायता करता है। प्रकाशितवाक्य 1:4-5 से तुलना करें।

4. 4 प्राणी।

यूहन्ना ने परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर चार प्राणियों को खड़े देखा(प्रकाशितवाक्य 4:6-9)। वे सभी स्वर्गीय जीव हैं, जो सृष्टि और उसमें पाये जाने वाले प्राणियों को दर्शाते हैं। जगत परमेश्वर के उद्धार के इतिहास का एक रंगमच है। इन चार प्राणियों का उद्देश्य सम्पूर्ण इतिहास के कालों में परमेश्वर के शासन के दौरान परमेश्वर की महिमा का समर्थन व प्रशंसा करना है(प्रकाशितवाक्य 4:8)।

5. 24 पुरनिए।

यूहन्ना ने 24 पुरनियों को परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर लगे हुए 24 सिंहासनों पर बैठे हुए देखा(प्रकाशितवाक्य 4:4; व 21:12-14)। वह स्वर्ग में स्वर्गदूतों को सबसे उच्च क्रम है, जो पुराने नियम के दौर में परमेश्वर के लोगों (12 गोत्रों) और नये नियम में परमेश्वर के लोगों (12 प्रेरितों)को प्रदर्शित करते हैं। उद्धार इसी सृष्टि के अर्न्तगत होता है। 24 पुरनियों का काम केवल सृष्टि में परमेश्वर की महिमा करना है(प्रकाशितवाक्य 4:11)।

6.कांच का समुद्र।

पीतल का सा समुद्र। पुरान नियम में पीतल का समुद्र पानी के उस हौज़ को दर्शाता है जो धूप वेदी और मन्दिर के बीच में रखी जाती थी। पुराने नियम में याजक वेदी पर सेवा निभाने या मन्दिर में जाने से पहले इस हौज़ में अपने हाथ व पैरों को धोया करते थे (निर्गमन 30:18-21; 1राजा 7:23-26)।

नये नियम में (प्रकाशितवाक्य 4:6)बिल्लौर के जैसा स्वच्छ समुद्र यीशु मसीह के लहू को दर्शाता है जिसमें मसीही लोग विश्वास के साथ अपने वस्त्रों को धोकर श्वेत बना लेते हैं(7:4)। जो यीशु मसीह की मृत्यु व उसके पुनरूत्थान द्वारा उद्धार व धर्मी ठहराये जाने को दर्शाता है, जिसमें होकर लोग उसके पास व उसके नये नियम के समाज (मन्दिर) में प्रवेश कर सकते हैं। अत: प्रकाशितवाक्य 4:6 में बिल्लौर के समान साफ कांच का सा समुद्र परमेश्वर के उद्धार को प्रगट करता है। परमेश्वर का शासन सारे राष्ट्रों के मसीहियों को उद्धार प्रदान करता है, ताकि वे परमेश्वर के साथ सिद्ध शान्ति व सोहार्द में जीवन व्यतीत कर सकें (रोमियों 5:1)।

लाल समुद्र। पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा फिरौन व उसकी सेना को नाश किये जाने के बाद मूसा और समस्त इस्राएली लाल समुद्र के तट पर खड़े हुए(निर्गमन 13:21-22; 14:19,24)। उसने कूशी सेना के बीच में गड़बड़ी पैदा करके उन्हें समुद्र में ही खत्म कर दिया। समुद्र का जल सुनामी के जैसे उन पर चढ़ गया और इन शत्रुओं को पूरी तरह से ढांप दिया। उनमें से एक भी न बचा।

नये नियम में (प्रकाशितवाक्य 15:2-4)यूहन्ना ने एक पारदर्शी कांच का सा समुद्र देखा जिसमें आग मिली हुई थी और वह परमेश्वर के सिंहासन के सामने फैला हुआ था। यह उस स्थान को दर्शाता है जहां पर परमेश्वर उस पशु का अनुसरण करने वालों का न्याय करेगा जिन्होंने नये नियम में परमेश्वर के लोगों को सताया था। परमेश्वर रहित व दुष्ट लोग हमेशा के लिए

उस आग की झील में नाश होंगे। अत: प्रकाशितवाक्य 15:2-4 में कांच का समुद्र जिसमें आग मिली है, परमेश्वर के न्याय को दर्शाता है।

'आग' परमेश्वर के पवित्र क्रोध को दर्शाती है जिसके द्वारा वह अन्तिम न्याय करेगा। 'कांच' दर्शाता है कि उसका पवित्र व धर्मी क्रोध पारदर्शिता व स्पष्टता के साथ न्याय करता है। संसार के दुष्टों व ईश्वररहित लोगों को न्याय करने के बाद, न्याय करने में उसकी पवित्रता और धार्मिकता बेदाग रहती है और हमेशा तक सबके लिए प्रगट होती रहती है। कुछ भी छुपा या सन्देह पूर्ण अवस्था मं नहीं रहेगा। "क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गये हैं"(15:4) और सबसे द्वारा देखे गये व सबके द्वारा स्वीकार किये जाने चाहिए। बुराई व अशुद्धता परमेश्वर के सामने टिक नहीं पाएंगी(21:8,27)। परमेश्वर की आंखों के सामने सब चीज़ें खुली व प्रगट हैं।

7. सार्वभौमिक आराधना।

यूहन्ना देखता है कि किस प्रकार से चारों प्राणी लगातार परमेश्वर की पवित्रता की प्रशंसा और स्तुति करते हैं (प्रकाशित वाक्य 4:8)और कैसे वे 24 पुरनियें परमेश्वर की आराधना,स्तुति व प्रसंशा करने के समय पूरी तरह लेटकर उसे दण्डवत करते हैं (प्रकाशितवाक्य 4:10-11;5:11-14)। इन सारे दृष्टिकोणों के द्वारा परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि आत्मिक क्षेत्रों व इस संसार में पाये जाने वाले सभी लोग परमेश्वर की आराधना करें।

आराधना। परमेश्वर के सिंहासन के चारों तरफ खड़ें लोगों में से एक होने नाते, आईये हम परमेश्वर के श्रेष्ठ नियमें व उसके राज्य करने के तरीकों की प्रसंशा के द्वारा हम परमेश्वर की आराधना करें।

3.	**बाँटना** (20 मिनट)	*[एकान्त समय]*
		2 शमूएल 15,17,18,22

- ***आगे बढ़कर*** (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (यहोशू 1-4)से क्या सीखा।
- अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70मिनट)	*[सम्बन्ध]*
		माता पिता व बच्चों के बीच सम्बन्ध

यह अध्ययन इस बात को ध्यान में रखकर किया जा रहा है कि हम वैसे माता पिता या बच्चे बने जैसा परमेश्वर ने चाहता है। व्यवहारिक अभ्यास केवल सुझाव हैं आप अपनी संस्कृति व समाजिक परिस्थितियों के हिसाब से इनका इस्तेमाल कर सकते हैं।

क.माता पिता की उनके बच्चों के प्रति जिम्मेदारियां।

1.विवाह के समय माता पिता की जिम्मेदारी।

इफिसियों 5:22-33(कुलुस्सियों 3:18-19; यूहन्ना 13:34-35)पढ़ें।

खोजें व चर्चा करें। परमेश्वर ने पतियों और पत्नियों को क्या जिम्मेदारियां दी हैं?

ध्यान दें। पति और पत्नि जिस तरह से एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं वह अपने आप में एक आदर्श होना चाहिए। एक दूसरे के बीच उनके रिश्ते से बच्चों को पति के अधिकार के बारे में पता चलना चाहिए जो अपनी पत्नी से ठीक उसी तरह प्रेम करता है जैसे मसीह अपनी कलीसिया को प्रेम करता व उसे सुन्दर रूप में प्रगट करता है ठीक उसी प्रकार से वे पत्नि के आदर्श को भी देख सकें जो अपने पति की सहायता करती है जैसे कलीसिया मसीह के लिए। निश्चय ही उन्हें आपस में एक दूसरे के प्रति व बच्चों के साथ व्यवहार करने में एक आदर्श बनना चाहिए।

2. पालन पोषण करने में माता पिता की जिम्मेदारियां।

इफिसियों 6:4;(कुलुस्सियों 3:21; 1 तीमुथियुस 3:4-5 व तीतुस 1:6; तीतुस 2:4-5)।

खोजें व चर्चा करें। परमेश्वर ने माता पिता को क्या विशेष जिम्मेदारियां दी हैं?

ध्यान दें।

पिता। अपने बच्चों को न चिढ़ायें और रिस न दिलाए। उन्हें परमेश्वर के भय में बढ़ाए। अपने परिवार का भले प्रकार से प्रबन्ध करें। अपने बच्चों को आपका और आपकी पत्नी का आदर करते हुए आज्ञा पालन करना सिखाएं।

माताएं। अपने बच्चों को प्रेम करें। घर के कामों में व्यस्त रहें। आपके व्यवहार की वजह कोई जन परमेश्व के वचन को बुरा न कहे।

ख. पिता, अपने बच्चों को रिस न दिलायें।

सिखाए। परमेश्वर पिता से घर के मुखिया के रूप में बात करता है।

इसलिए माता को इस लक्ष्य को पूरा करने में पिता की सहायता करनी चाहिए(उत्पत्ति 2:18)।

रिस दिलाना। रिस दिलाने का अर्थ है निरूत्साहित करना। अपने बच्चों का आपके प्रति बर्ताव देखकर ही आप बता सकते हैं कि आपने अपने बच्चे को रिस दिलाई या निराश किया है। उदाहरण के लिए, जब बच्चें चिढ़चिढ़ाये हुए, क्रोधित और निराश होते हैं या जब वे अपने माता पिता को छोड़ देते या उनसे दूर हो जाते हैं, तो हो सकता है कि उनका मनोबल टूट गया है। उनका बर्ताव आपके लिए एक संकेत है कि आपको उनके प्रति अपने व्यवहार को जल्द ही बदल देना चाहिए।

आदर। आप अपने बच्चों में आदर किस प्रकार संचारित कर सकते हैं? अपने बच्चों को:

वह समय देकर, जो उन्हें बढ़ने, विकसित होने और गलतिया करने के लिए चाहिए।

जिम्मेदारियां व उत्तरदायित्व सौंप कर।

अपने निर्णय लेने की आज़ादी देकर।

सिद्ध रिश्तों को विकसित करने को आज़ादी देकर।

1. होने दें कि आपके बच्चें जिम्मेदारियों व उत्तरदायित्वों में बढ़ें।

अभिभावकों के लक्ष्य। अभिभावक होने के नाते हमारा कर्तव्य मात्र अपने बच्चों को प्रसन्न करना ही नहीं, परन्तु उन्हें एक जिम्मेदार व्यक्ति बनाना है।

चर्चा करें। यदि आपके जीवन का लक्ष्य केवल अपने बच्चों को प्रसन्न करने का ही होगा, तो आपके बच्चे कैसे बनेंगे?

ध्यान दें। वे बिगड़ जाएंगे, वे स्वार्थी और खुदगर्ज बनेगें।

जिम्मेदारियों को विकसित करना।

चर्चा करें। आप अपने बच्चों को जिम्मेदार नागरिक बनने में किस प्रकार से सहायता कर सकते हैं?

ध्यान दें। जिम्मेदार व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की जिम्मेदारी लेना सीखते है। जिम्मेदारियां सिखाने के महत्वपूर्ण क्षेत्र निम्न हैं: उनका स्वभाव, उनकी बातें व उनका व्यवहार, उनकी शिक्षा व नौकरियां, परिवार में उनका कामकाज में योगदान, पैसों का रख रखाव करना, अकेले यात्रा करना,मित्र बनाना,तनाव का सामना करना या दूसरों के विचारों के साथ सहयोग देना और परमेश्वर के साथ उनका सम्बन्ध।

जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व को विकसित करने के स्तर।

सिखाएं। बचपन से लेकर प्रौढ व्यक्ति बनने तक आपकी शिक्षा के पांच स्तर हो सकते हैं।

- **जब वे शिशु हैं, तो उनके लिए सारे काम करें।** अपने बच्चों के ओर से सारे निर्णय लें और उन निर्णयों के अनुसार कार्य भी करें। माता पिता होने के नाते आप100 प्रतिशत जिम्मेदार व उत्तरदायी हैं कि आप अपने बच्चे के लिए और उसके साथ क्या करते हैं।
- **जब वे छोटे बच्चे हैं तो आप उनके साथ मिलकर काम करें।** बच्चों को आपके साथ मिलकर कार्य करने का अवसर प्रदान करें। निर्णय व योजनाए एक साथ मिलकर तय करें और एक साथ मिलकर उन कामों को अन्ज़ाम दें। जितना सम्भव हा सके, बच्चों सत्य वचन, नैतिक शिक्षाएं अच्छी आदतों के बारे में शिक्षा दें। काम करने के मामले में अपने बच्चों के लिए एक अच्छा आदर्श बनें, उनके सामने गुणवत्ता व समर्पण को लेकर एक स्तर निर्धारित करें, नैतिक व आत्मिक मूल्यों को कायम रखें, जिनका बच्चा अनुसरण कर सकता है। अपने बच्चे पर जाहिर करें कि आपने अपने जीवन को परमेश्वर व परमेश्वर के वचनों में समर्पित किया है और आप परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार व उत्तरदायी हैं।
- **जब वे युवा हो जाते हैं। होने दें कि वे ज्यादा से ज्यादा काम अपने आप करें लेकिन आपके निरीक्षण** में। युवाओं के साथ मिलकर काम करना जारी रखें, लेकिन जिन क्षेत्रों में जवान जिम्मेदारी उठाने या उत्तरदायी होने के लिए तैयार है,

उन क्षेत्रों में आप उन्हें जिम्मेदारी सौंप सकते हैं। युवाओं का ज्यादा आज़ादी देने का अर्थ है कि युवाओं को ज्यादा जिम्मेदारी दी जा रही है,इसलिए वे अधिक उत्तरदायी हैं। आज़ादी का अर्थ यह नहीं है कि युवा जो जी में आए करें या वे किसी के प्रति उत्तरदायी हुए ही सारे कामों को कर सकते हैं(व्यवस्था विवरण 12:8; न्यायियों 21:25)। युवाओं को अपने निरीक्षण में निर्णय लेने व योजनाएं बनाने के लिए, काम करने तथा अपनी बातें रखने का ज्यादा से ज्यादा अवसर प्रदान करें। माता पिता होने के नाते, आपको अन्तिम निर्णय लेने का अधिकार और जिम्मेदारी व उत्तरदायित्व भी है।

- **जब वे व्यस्क हो जाते हैं। उन्हें सारे काम अपने आप करने दें।** उन व्यस्कों को पूर्ण जिम्मेदारी व उत्तरदायित्व सौंप दें। सुनिश्चित करें कि वह व्यस्क अपनी जिम्मेदारी को समझता है और अब वह जो कुछ करता या बोलता है उसके लिए 100 प्रतिशत उत्तरदायी है, सर्वप्रथम वह माता पिता होने के नाते आपके प्रति उत्तरदायी है और सबसे बढकर वह परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी है।
- **जब वे प्रौढ़ हो जाएं। उन्हें पूरी तरह से निर्णय लेने की आज़ादी सौंपें।** बच्चें प्रौढ़ होने पर बचपना छोड़ दें, या उन्हें पढ़ने या प्रशिक्षण या कार्य करने के लिए भेज दिया जाए, या उनका विवाह कर दिया जाए। उसके पश्चात परमेश्वर बच्चों को आज्ञा देते हैं कि वे अपने माता पिता के घर को छोड़कर अलग रहें। और माता पिता को अपने बच्चों को पूरी तरह से स्वतन्त्र छोड़ देना चाहिए(मत्ती 19:5)। अपने वे प्रौढ़ परमेश्वर के प्रति 100% जिम्मेदार व 100% उत्तरदायी हैं। माता पिता की अब भी अपने बढ़ हो चुके बच्चों के प्रति जिम्मेदारियां है लेकिन उनका उन पर कोई अधिकार नहीं है। माता पिता की नियमित जिम्मेदारी यह है कि वे अपने बच्चों की इस अवस्था में सहायता व उन्हें प्रेम करें, उनके लिए प्रार्थना करें, जब वे किसी काम के लिए सलाह मांगें तो केवल मांगने पर हो सलाह दें और यदि कोई खतरा नज़र आये तो उन्हें सतर्क कर दें।

2. होने दें कि आपके बेटे बेटियां अपनी विचार धाराओं को विकसित करें।

माता पिता का लक्ष्य। माता पिता होने के नाते आपका लक्ष्य अपने बच्चों को आपके विचारों या निर्णयों पर आधारित होने से रोकना, और उन्हें अपने मूल्यों,प्राथमिकताओं, विश्वास, विचारधाराओं को विकसित करना सिखाना है।

विचार धारा को विकसित करना।

चर्चा करें। आप किस प्रकार अपने बच्चों को अपना निर्णय लेना सिखा सकते हैं?

ध्यान दें। जब माता पिता अपने बच्चों से अपने विचारों, मत,मूल्यों,प्राथमिकताओं,कामों को करने के तरीकों के लिए अचूक आज्ञापालन चाहते हैं तो वे अपने बच्चों को एक ऐसा जिम्मेदार व्यस्क बनने में बाधा डालते हैं जो अपने विचार, मतों,प्राथमिकताओं के आधार पर निर्णय ले सके।

निरूत्तरता को विकसित करने के चरण।

सिखाएं। आप उन्हें तीन कदमों के द्वारा निरूत्तरता सिखा सकते हैं।

- **उनके साथ मिलकर बाइबल के सत्यों की खोज करें।** बाइबल के सिद्धान्त विश्वासियों द्वारा किये जाने वाले किसी भी निर्णय की सीमा को निर्धारित कर सकते हैं।
- **उन्हें किसी उपयुक्त तरीके का चुनाव करने दीजिए।** हालांकि बाइबल का तरीका कभी नहों बदलता, लेकिन एक सत्य को इस्तेमाल करने के बहुत से तरीके हो सकते हैं।
- **उनके निणय के परिणाम पर उनके साथ चर्चा करें।** उदाहरण के लिए, बाइबल युवाओं के वस्त्रों को लेकर दो सिद्धान्त सिखाती है: हमारे कपड़े हमेशा नैतिक तौर पर ग्रहण योग्य(इफिसियों 5:5) और सामाजिक तौर पर हर उपलक्ष्य पर उपयुक्त होने चाहिए(1 कुरिन्थियों 10:31-33)। इन नैतिक व सामाजिक सीमाओं के दायरे में, युवाओं को पूरी आजादी है। वे अपने चुनाव करते व अपने निर्णय लेते हैं। उनके अभिभावक उनके चुनाव के परिणाम पर चर्चा करते हैं और विचार करते हैं कि उनके इस चुनाव का दूसरों व स्वयं उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

3. होने दें कि आपके बेटे व बेटियां परिपक्व मनोभावों और रिश्तों का निर्माण करें।

अभिभावकों का लक्ष्य। हमारा लक्ष्य अपने बच्चों के साथ सहज रिश्ता कायम करना नहीं वरन एक परिपक्त रिश्ता कायम करना है। माता पिता होने के नाते हमारा लक्ष्य अपने बच्चों को स्वावलम्बी बनाना नहीं, वरन स्वस्थ पारस्परिक निर्भरता र्निमाण करना है। पाश्चात्य संस्कृति स्वावलम्बीता का समर्थन करती है परन्तु बाइबल पारस्परिक प्रेम का समर्थन करती है।

एक परिपक्व रिश्ते की विशेषता यह होती है कि उसमें शामिल हर व्यक्ति अपनी बातों व अपने कामों की ज़िम्मेदारी लेता है, हर व्यक्ति अपना व्यक्तिगत विचार रखता व उनके हिसाब से जीवन व्यतीत करता है, हर एक व्यक्ति अपने मनोभावों को पूर्ण

ईमानदारी से व्यक्त करता है, तथा रिश्ते के तहत दोनो पक्ष पूर्ण भरोसे के साथ एक दूसरे पर निर्भर होते हैं(यही है: एक दूसरे को प्रेम करना)।

परिपक्व भावों को विकसित करना।

चर्चा। किस प्रकार से आप युवाओं की अपने भावों को ईमानदारी व परिपक्व तरीके से पेश करने में सहायता कर सकते हैं?

ध्यान दें। युवाओं में बढ़ी मजबूत मनोभाव होते हैं और वे उसे दूसरों के सामने प्रगट भी करते हैं। माता पिता कठोर या कड़े मनोभावों को देखना पसन्द नहीं करते जैसे,क्रोध चिड़चिड़ाहट, चिल्लाना, लड़ना, रोना इत्यादि। वे उन्हें उनके बच्चों में ही कुचल देते या सीमित कर देते हैं। युवा लोग कहने की कोशिश कर रहे होते हैं कि,"मैं ऐसा हूँ!", "मैं सच में ऐसा महसूस करता हूँ!","मैं जैसा हूँ उसी रूप में मुझे स्वीकार कीजिए!" जवानों को अधिकतर ईमानदार या सच्चे सम्बन्ध चाहिए होते हैं, जबकि अभिभावक हमेशा सहज सम्बन्ध चाहते हैं।

यदि युवाओं की भावनाओं को कुचला जाता रहा तो, वे अपने मनोभावों को हर प्रकार के असामाजिक व अनुचित कार्यों या व्यवहारों जैसे झूठ बोलना, अपराध करना, नशीले पदार्थो का सेवान करना, यौन सम्बन्ध बनाना या झगड़े करना या सब प्रकार की भावनात्मक समस्याओं में जैसे, उदासी, सबसे अलग रहना, छिपा हुआ गुस्सा, कड़वाहट या बुरे व्यवहार में प्रगट करेंगे। इसलिए अपने बच्चों को अपने मनोभावों को प्रगट करने की आज़ादी दे, लेकिन उन्हें अपने मनोभावों को संयम, प्रेम और ईमानदारी के साथ बताने में उनकी सहायता करें।

परिपक्व सम्बन्धों को विकसित करना।

चर्चा। आप युवाओं की एक दूसरे पर आधारित सम्बन्धों को विकसित करने में किस प्रकार सहायता करेंगे?

ध्यान दें। बाइबल हर एक विश्वासी को किसी खास परिवार, किसी खास मण्डली या किसी खास समाज में वर्गीकृत करती है। बाइबल के परिदृश्य से वह किसी व्यक्ति को एक अलग ईकाई के रूप में नहीं देखती, जो स्वयं अपनी मर्जी से जीवन व्यतीत कर रहा हो, वरन लोगों को परिवार के एक सदस्य, मण्डली के एक सदस्य या फिर समाज में एक नागरिक के रूप में देखती है। बाइबल के दृष्टिकोण से हम सभी को एक दूसरे की जरूरत होती है, और हम सभी के पास एक दूसरे का जीवन सवारने के लिए एक अनोखी भूमिका दी गयी है।

उदाहरण के लिए: माता पिता व बच्चों को एक साथ मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, एक दूसरे के प्रति खुला होना चाहिए, और एक दूसरे से सीखना और एक दूसरे की सेवा करनी चाहिए।

अस्वस्थ सम्बन्धों के उदाहरण।

- कई माताएं बच्चों को हमेशा अपने ऊपर निर्भर बनाकर रखती हैं।
- कई व्यस्क बच्चे अपने आपको अपने माता पिता के नियन्त्रण व प्रभुता से आजाद कराने में असमर्थ होते हैं।
- कई पुरूष अपनी मंगेतर में अपनी मां को देखना चाहते हैं।
- कई स्त्रियां अपने दुर्बल पति या मंगेतर पर एक नर्स के समान तरस खाना चाहती है।
- बाइबल समलैंगिक विवाह का समर्थन नहीं करती और न हीं वह स्त्रियों या पुरूषों में समलैंगिकता को बढ़ावा देती है।

ग. पिता, अपने बच्चों का पालन पोषण परमेश्वर के वचनों व निर्देशों के आधार पर करो

सिखाएं। बच्चे की मां को प्रेम करना और बच्चों की परवरिश करना दोनों एक पिता की जिम्मेदारियां हैं!

- 'उन्हें परमेश्वर के वचनों की शिक्षा देने', का अर्थ है उन्हें बाइबल की सच्चाई के बारे में बताना।
- परमेश्वर के वचनों के आधार पर प्रशिक्षित करने' का अर्थ है, अपने बच्चों को बाइबल की सच्चाईयों का अभ्यास करना सिखाना।
- इस काम को पूरा करने के लिए माता ने भी पिता की सहायता करनी चाहिए (उत्पत्ति 2:18)।

अपने बच्चों को इस संसार में एक अच्छा नागरिक बनने की शिक्षा दें।

नीतिवचन 22:6; नीतिवचन 13:24; नीतिवचन 17:21 व 23:24; लूका 2:52; 1 कुरिन्थियों 13:4-8 तक पढ़ें।

खोजें व चर्चा करें। वे कौन से प्रमुख क्षेत्र हैं जिनमें अभिभावकों को अपने बच्चों को प्रशिक्षित करना चाहिए?

ध्यान दें। उनको उन मार्गों की शिक्षा दें जिसमें परमेश्वर उन्हें चलाना चाहता है। स्वस्थ परिवार ही एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

प्रशिक्षण देने का अर्थ। प्रशिक्षण का अर्थ है:

- सत्य का अपने व्यवहारिक जीवन में अभ्यास करना।
- सत्य का व्यवहारिक जीवन में इस्तेमाल करते हुए अभ्यास करना।
- उन कार्यों को बार बार करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- उन्हें अनुशासित करना व जरूरी हो तो उन्हें ताड़ना देना।

प्रशिक्षण के क्षेत्र। उन्हें खास तौप प्रशिक्षित करें:

- बुद्धिजीवी,शारीरिक,आत्मिक व सामाजिक परिपक्वता में।
- बुद्धिमान बनाने कि लिए
- प्रेम करने के लिए। 'प्रेम' का अर्थ धीरज, कृपा, शालीनता, नम्रता, उच्च आचरण,निस्वार्थ सेवा, संयम व क्षमा।

2. अपने बच्चों को परमेश्वर के राज्य के अच्छे नागरिक होने की शिक्षा प्रदान करें।

नीतिवचन 14:26 व 20:7; व्यवस्थाविवरण 6:4-9 **पढें।**

खोजें व चर्चा करें। माता पिता द्वारा निर्धारित किये गये उदाहरण का क्या महत्व होता है? बाइबल में प्रशिक्षण का क्या महत्व है?

ग.माता पिता के प्रति बच्चों की जिम्मेदारियां।

माता पिता के प्रति बच्चों की क्या जिम्मेदारियां हैं? बच्चों को यह जानना बहुत जरूरी है कि उनके माता पिता चाहे सिद्ध न हों परन्तु बहुमूल्य हैं। माता पिता अपने बच्चों को प्रेम करते हैं इसलिए उन्हें अच्छे अभिभावक बनने के लिए अपने बच्चों के सहयोग की आवश्यकता होती है।

इफिसियों 6:1-3;(कुलुस्सियों 3:20; नीतिवचन 23:22-25)।

खोजे व चर्चा करें। परमेश्वर अपने बच्चों को कौन सी खास जिम्मेदारियां प्रदान करते हैं?

ध्यान दें। ये दो जिम्मेदारियां दो उत्तम उपहारों के समान हैं जो आप अपने माता पिता को दे सकते हैं:

- अपनी जवानी के समय में आज्ञा पालन करना।
- और जब आप व्यस्क हो जाएं तो उनका आदर करना।

ड बच्चों परमेश्वर में अपने माता पिता की आज्ञा मानना

माता पिता की आज्ञा मानने के सन्दर्भ में तीन सच्चाईयां सिखाएं:

1.अपने माता पिता की उन आज्ञाओं का पालन करें जो बाइबल के विरूद्ध नहीं हैं।

मत्ती 10:37;(मरकुस 7:1-13; प्रेरितों 4:19-20; 5:29; 1 कुरिन्थियों 9:19-23)**पढें।**

चर्चा करें। किन परिस्थियों में आपको अपने माता पिता की बातों से बढ़कर यीशु की बातों को मानना चाहिए?

तथा किन परिस्थितियों में आप अपने अभिभावकों को प्रसन्न कर सकते हो?

ध्यान दें। अगर आपके माता पिता आपसे कुछ ऐसा काम करने के लिए कहते हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में गलत है,या आपका परिवार यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए आपका सताता है और आपसे यीशु का इनकार करने के लिए कहता है, या वे आपसे किसी गैर मसीही व्यक्ति से विवाह करने के लिए जोर डालते हैं, तब *आप बढ़ी नम्रता के साथ* अपने माता पिता की बात मानने से इनकार कर सकते हैं। यदि आपका परिवार आपसे उन रीति रिवाजों को मानने के लिए कहते हैं जो बाइबल के विरूद्ध हैं तो आप उनसे विनम्रता के साथ मना कर सकते हैं। फिर भी, कुछ परम्पराएं, रीतियां व पारिवारिक नियम, जिन्हें आपका परिवार मानता है, बाइबल के खिलाफ नहीं हैं। उन बातों का पालन करने से आपके माता पिता को आदर मिलेगा।

2. जब तक आप छोटे बच्चे हैं निश्चय ही हर बात में अपने माता पिता की आज्ञा का पालन करें।

लूका 2:51 व मरकुस 3:20-21, 31-35 **पढ़ें।**

ध्यान दें। बाइबल हमें यह नहीं सिखाती कि आप जीवन भर अपने माता पिता की बात मानते रहें, लेकिन जब आप छोटे बच्चे होते हैं अर्थात जब तक आप व्यस्क नहीं हो जाते तब तक उनकी बात जरूर मानें! व्यस्क जीवन तब प्रारम्भ हो जाता है जब आप अपने माता पिता का घर छोड़ते हैं, या आप आगे को अपने माता पिता पर आश्रित नहीं रहते, या जब आपका विवाह हो जाता है। अत: अपने माता पिता की आज्ञा मानने का एक सीमित समय है, अर्थात आपके व्यस्क हो जाने तक। लेकिन अपने माता पिता का आदर करने की कोई समय सीमा नहीं है।

3. मसीही होने के कारण अपने माता पिता की आज्ञाओं को मानें।

'प्रभु में अपने माता पिता की आज्ञा मानें' का अर्थ यह नहीं है कि आप अपने माता पिता के मसीही होने पर ही आज्ञा मानें,लेकिन आपको उनकी आज्ञा इसलिए माननी है क्योंकि आप मसीही हैं।

च. बच्चें अपने माता व पिता का आदर करें।

सिखाएं। आदर करने का अर्थ: उच्च कोटि का सम्मान दें, उनकी बातों पर ध्यान दें, और बिना अरूचि,स्वार्थ या भय के उन्हें प्रेम करें। निम्नलिखित उदाहरण सभी लोगों के लिए उनके माता पिता, सास-ससुर व परमेश्वर पिता के साथ सम्बन्ध बनान को ध्यान में रखकर दिये गये हैं। पांच ऐसे तरीके हैं जिससे आप अपने माता-पिता, सास-ससुर व सबसे बढ़कर अपने परमेश्वर पिता का आदर या अनादर कर सकते हैं।

चर्चा करें। अपने माता पिता, सास ससुर व सर्वोच्च भाव में अपने पिता परमेश्वर का आदर करने के पांच तरीकों पर चर्चा करें।

1. अपने माता पिता से बहस न करके उनका आदर करें।

जब आप अपने माता पिता से किसी ऐसी बात पर बहस करते हैं जिसका कोई आत्मिक मतलब नहीं होता तो आप उनका अनादर करते हैं। उदाहरण के लिए, उनसे इस बात पर बहस न करें कि कौन से कपड़े पहनने के लिए उपयुक्त हैं, या कौन सा टेलिवीजन का कार्यक्रम देखना चाहिए या किसे घर के कुछ विशेष काम करने चाहिए। बहस करने से यह संदेश जाता है कि उनके विचार बेकार हैं।

आप किस तरह से सकारात्मक तौर पर अपने माता पिता का आदर कर सकते हैं? अपनी बात को विनम्रता के साथ सबके सामन रखकर परमेश्वर को अवसर दें कि वह अपने पसन्दीदा तरीके से काम करे। इस तरह आप यह दर्शाते हैं कि विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हर एक परिस्थिति पर नियन्त्रण रखता है और परमेश्वर आपके हित के लिए सर्वोत्तम काम कर सकता है।

2. अपने माता पिता से सुझाव मांगकर व उसकी सलाह को गम्भीरता से लेकर उनका आदर करें।

आप जब अपने माता पिता के सुझावों को अस्विकार करते व उनकी सलाह पर ध्यान नहीं देते तो आप उनका अनादर करते हो। जब आप अपने रूतबे को सुरक्षित रखते हुए उन्हें यह दर्शाने की कोशिश करते हैं कि उनके विचार या सलाह तो सुनने के काबिल भी नहीं हैं, तो आप उनका अनादर करते हैं।

आप सकारात्मक तौर पर अपने माता पिता का आदर किस प्रकार से कर सकते हैं? जब कभी आपके माता पिता आपको सुझाव या कोई सलाह दें,उनसे जरूर सीखें। जब भी कभी आपको मौका मिले तो आप उनके पास बैठकर उनके वर्षों के अनुभव से सीखकर बुद्धिमान बनें। खास तौर पर उन क्षेत्रों से सीखें जिनमें वे माहिर थे, उनकी योग्यताओं,उनके कौशल, उनके ज्ञान से सीखने का प्रयास करें। कई माता पिता को योजना बनाने व प्रबन्ध करने,व्यापार करने व धन की बचत करने,खाना बनाने व किसानी करने में महारथ हासिल है। दूसरों को अगुवाई करने, शिक्षा देने, सलाह देने और सेवा करने में महारथ हासिल है। आप अपने माता पिता से सलाह मांगकर और उने सीखकर उनका आदर करते हैं।

3. अपने व्यवहारिक जीवन में अपने माता पिता को शामिल करने के द्वारा उनका आदर करें।

जब आप अपने माता पिता को अपने विचारों, भावनाओं और अपने कामों से दूर रखते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। आप तब भी अपने अपने अभिभावकों को अनादर करते हैं जब आप अपने अभिभावकों को अपनी योजना के बारे में नहीं बताते या आप उनका अपनी योजना के प्रति कोई विचार प्रगट करने का कोई अवसर प्रदान नहीं करते। जब आप अपने माता पिता को अपने आनन्द व अपने दु:खों, अपनी खुशी व अपने गमों में शामिल नहीं करते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। अपने जीवन व अपनी योजनाओं से अपने माता पिता का दूर रखना उन्हें यह जताता है कि वे इन सब बातों में शामिल किये जाने के योग्य नहीं हैं।

आप सकारात्मक तौर पर अपने माता पिता का आदर किस प्रकार से कर सकते हैं? अपने माता पिता को अपनी योजनाओं के बारे में बताएं। यह करना काफी कठिन काम है,लेकिन अपने अभिभावकों का आदर करने का यह सबसे बेहतर तरीका है। उन से बात करने की पहल करें। उन से अपनी गतिविधियों के बारे में बातें करें: अर्थात आपने आज स्कूल या कार्य करते समय क्या किया, आप अपने मित्रों व मण्डली के साथ क्या करते हैं। उनसे अपने मत के विषय में बातचीत करें: अर्थात परमेश्वर,लोगों और संसार के बारे में बात करें। अपने मसीही विश्वास के बारे में उनसे बातचीत करें। उन्हें बताएं कि आप क्या सोचते हैं, कैसा महसूस करते हैं और क्या करना चाहते हैं। अपने माता पिता को अपनी योजनाओं में शामिल करके आपको उनका आदर करना चाहिए। अपने अभिभावकों के अनुभवों व उनकी बुद्धिमानी का आदर करें व उनसे सलाह मांगें। चाहे आपका अन्तिम निर्णय उनकी सलाह के अनुसार न हो तब भी उन्हें यह महसूस हो कि आपने उनकी बातों को सुना था और उनके विचारों को गम्भीरता से लिया है। अपने प्रारम्भिक काल में, आप प्रति सप्ताह की खबर दे सकते हैं कि किस तरह से आप प्रगति कर रहे हैं। तदपश्चात यदि जरूरी हुआ तो, वे आपके आर्थिक निर्णयों के साथ समायोजन कर सकते हैं और यह खबर उनके लिए यह खबर हैरान करने वाली नहीं होगी।

4. अपने माता पिता व दूसरों की सेवा करने के द्वारा अपने अभिभावकों का आदर करो।

आप अगर बेमन या उनके कहने पर ही अपने माता पिता की सेवा करते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। आप चाहते हैं कि वे पहल करें। अगर वे आपसे कुछ न कहें तों आप वास्तव में उनके लिए कुछ नहीं करते। आप कभी भी स्वच्छा से उनके लिए कोई काम नहीं करते हैं। आप अपनी जवानी की ताकत का इस्तेमाल अपने माता पिता के बोझ को उठाने के लिए इस्तेमाल नहीं करना चाहते। आप किस तरह से सकारात्मक रूप में अपने अभिभावकों का आदर कर सकते हैं? अपने भीतर यह आदत बनाये कि अपने आप सेवा करन के मौके को ढूढ़ें, देखें कि क्या किसी को सहायता की जरूरत है और यदि आप कुछ ऐसा काम कर सकते हैं जो कोई और नहीं करना चाहता या कर नहीं सकता तो उसे करें। सेवा व सहायता करने के लिए पहल करें अपने माता पिता के आदेश का इन्तज़ार न करें।

अपने व्यवहार में एक आदर्श बनें। घर में अपने भाई बहनों के साथ अच्छा रिश्ता बनाकर रखें। बिना किसी के कहे घर के कामों में अपनी जिम्मेदारी को पूरा करें। अपने घर के बाहर,सजग व जिम्मेदार रहें। अपनी पढ़ाई व नौकरी में मेहनत करें। मेहनत करें। किस प्रकार के लोगों से आपको दोस्ती है, किस तरह की जगहों पर आप जाते हैं, आप कैसे काम करते हैं या नहीं करते हैं, इन सारी बातों का आप आपके माता पिता के एहसास पर काफी बड़ा प्रभाव पड़ता है।

5. प्रेम करने के द्वारा अपने माता पिता का आदर करें।

यदि आप अपने माता पिता को सांस्कृति तौर तरीकों को पूरा करने के लिए प्रेम करते हैं, जैसे कभी कभी उनसे मिलने जाना,उन्हें कुछ उपहार देना या उनकी इच्छाओं को पूरा करना आदि, तो आप उनका अनादर करते हैं। आप तब भी अपने माता पिता का अनादर करते हैं जब आप इन औपचारिक कामों को पुत्र के कर्तव्य मानकर बुरे स्वभाव या उदासीनता के साथ करते हैं। यदि आप किसी अनोखें ढंग से उनसे यह कहना बन्द कर देते हैं कि "मैं आपकी सराहना करता हूँ" आप उनका अनादर करते हैं। यदि आप उनसे कभी नहीं कहते की आप उनकी प्रसंशा करते हैं या उनका सम्मान करते हैं या आपके उनके तहे दिल से उन सारे कामों के लिए आभारी हैं जो उन्होने बीते दिनों में आपके लिए किये हैं, तो आप उनका आदर करते हैं। अगर आप उनकी गलतियों को लेकर असहनशील होते हैं और उनकी गलतियों पर उन्हें बदतमीजी से डांट देते हैं तो आप उनका आदर करते हैं। यदि आप उनकी गलतियों के लिए उन्हें कभी माफ नहीं करते, बल्कि लगातार उनसे गुस्सा रहते हैं वरन उन्हें बदले में चोट पहुंचाना चाहते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। ये सारी बातें आपके माता पिता को दर्शाती हैं कि आप उन्हें प्रेम नहीं करते।

अभिभावकों का अनादर उन्हें गहरी चोट पहुँचाता है। अभिभावकों का अनादर करने के सभी तरीके आपके अभिभावकों को यह बताते हैं कि आप उन्हें आदर का पात्र नहीं मानते हैं। जब आपके माता पिता गैर-मसीही हों तब ये तरीके अति कारगर साबित होते हैं, इस प्रकार का आचरण कहता है कि,"आप मसीह में नहीं हो,इसलिए आपके विचार हम मसीहियों के लिए कोई मायने नहीं रखते।" या "क्योंकि आप मसीह में नहीं हो,मैं आपको प्रेम नहीं कर सकता।" जब कोई पुत्र या पुत्री मसीह को अपना लेता है, तो बहुत से गैर विश्वासी अभिभावक डरने या सन्देह करने लगते हैं कि अब उनका सम्बन्ध उनके बेटे या बेटी से टूट जाएगा। इसलिए बेटे या बेटी के द्वारा गुस्से में किया गया काम उनकी हारने या अस्विकार किये जाने के मनोभाव की पुष्टि कर देता है। उनका व्यवहार बेमतलब तो जरूर होगा, मगर वह उनकी मनोदशा को पगट कर देता है।

आप अपने अभिभावकों का सकारात्मक रूप में किस प्रकार आदर कर सकते हैं? सच्चा मसीही प्रेम सामाजिक कर्त्तव्यों से भी परे काम करता है। सच्चा मसीही प्रेम गलतियों को सह लेता है और आपके प्रति की गयी बुराईयों को क्षमा कर देता है।

अपने माता पिता को समझने की कोशिश करें। उन तौर तरीकों को समझने का प्रयास करें जिनमें उनके माता पिता ने उनकी परवरिश की थी, उनके अभिभावक व परिवार के दूसरे सदस्यों के साथ उनके जीवन व रिश्तों में उन्होंने कितने कष्टों का अनुभव किया है। उनके मूल्यों को समझने का प्रयत्न करें, खास तौर पर धन व जीवन शैली, शिक्षा व प्रतिष्ठा, सच बोलने व ईमानदारी आदि के क्षेत्र में। समझने का प्रयास करें कि किस प्रकार के नियमों, संस्कृति,धार्मिक घारणों में उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया और इससे उनके विचारों, भावनाओं और व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ा। समझें कि वे विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार की प्रतिक्रिया करते हैं, जैसे वैवाहिक झगड़ों में, बच्चों के अनुशासन को लेकर,काम का दबाव पड़ने पर, यदि किसी चीज़ का नुकसान हो जाए या कोई गुज़र जाए तो या फिर जब किसी के द्वारा अन्याय किया जाए। और वे इस तरह की प्रतिक्रिया क्यों देते हैं। खास तौर पर उनकी गलतफहमियों व भय को समझने का प्रयास करें, खास तौर पर आप को लेकर, जब से आप मसीही बने हैं।

जब आप मसीही बनते है, तो आम तौर पर अभिभावकों को डर रहता है कि यीशु मसीह के प्रति आपका समर्पण और नकारात्मक रूप में प्रभावित करेगा। वे डरते हैं कि अब आप अपनी पढ़ाई अच्छे ढंग से नहीं करेंगे, अब आपको कोई अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी, आप जीवन में सफल नहीं हो पाओगे और अब आप कम पैसे कमाओगे और आप अपने आर्थिक तौर पर अपने माता पिता को सहारा नहीं दे पाओगे। उन्हें डर रहता है कि आप अपनी संस्कृति को खो देगे जिससे उनके धर्म की बदनामी होगी। तरीके के साथ उन्हें अपने मसीही विश्वास के बारे में बताएं और उन्हें साबित करके दिखाएं कि अब आप पहले से ज्यादा जिम्मेदार है और आपके जीवन में यीशु मसोह के काम करने के कारण आप और भी अधिक प्रेम करने वाले व्यक्ति बन गये हैं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज सीखी गयी सभी बातों के आधार पर परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए समूह में छोटी प्रार्थना करें।

या समूह को दो दो या तीन के समूह में बांट लें और फिर सीखी गयी बातों के आधार पर प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मिलकर "माता पिता व बच्चों के बीच सम्बन्ध" की शिक्षाओं के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: नहेमायाह 4,8,9,व 10 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। घर में ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। इफिसियों 6:10-20। शीर्षक: संसार में आत्मिक युद्ध। बाइबल अध्ययन में दिये गये पाँच कदमों को इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।